http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2026) वर्ष 6, अंक 2, 17-19

Article ID:562

गुलदाउदी की उत्पादन तकनीक

डॉ अनिल कुमार

पीएच.डी. (वनस्पति विज्ञान)
वनस्पति विज्ञान विभाग
डीडीयू गोरखपुर विश्वविद्यालय,
गोरखपुर-273001 (यू.पी.)

*अनुरूपी लेखक

डॉ अनिल कुमार*

गुलदाउदी एक अत्यंत लोकप्रिय एवं व्यावसायिक पुष्पीय फसल है जिसका उपयोग कट-फ्लावर, ढीले फूल, गमले के पौधे तथा उद्यान सजावट में व्यापक रूप से किया जाता है और इसके आकर्षक रंग, विविध आकार तथा लंबी पुष्प अवधि के कारण इसे शीतकालीन मौसम की प्रमुख सजावटी फसल माना जाता है।

गुलदाउदी एक अत्यंत लोकप्रिय, आकर्षक तथा व्यावसायिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण पुष्पीय फसल है, जिसे "शरद रानी" या "शीतकालीन रानी" भी कहा जाता है। यह एस्टेरेसी कुल की पौधा प्रजाति है और विश्व-भर में सजावटी पौधों में अग्रणी स्थान रखती है। इसके फूल रंग, आकार, बनावट तथा पुष्प संरचना की अत्यधिक विविधता के कारण उद्यान, पार्क, लैंडस्केप, कट-फ्लावर उद्योग तथा पुष्प सज्जा में व्यापक रूप से उपयोग किए जाते हैं। भारत में इसकी खेती उत्तर भारत, मध्य भारत, दक्षिण भारत तथा पहाड़ी क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न मौसमों में की जाती है।

वनस्पति विवरण

- पौधा: बहुवर्षीय शाकीय पौधा, जिसे व्यावसायिक खेती में वार्षिक की तरह उगाया जाता है।
- जड़ प्रणाली: रेशेदार व सतही।
- तना: कोमल, हरा, शाखायुक्त।
- पत्तियाँ: गहरे हरे रंग की, खंडित किनारों वाली, सुगंधित।
- पुष्पक्रम: कैपिटुलम।
- पुष्प प्रकार: सिंगल, सेमी-डबल, डबल, पोम्पोन, स्पून, क्विल आदि।

2. जलवायु एवं मिट्टी:

गुलदाउदी की सफल खेती के लिए शीतोष्ण एवं समशीतोष्ण जलवायु उपयुक्त होती है तथा 15–25°C तापमान वृद्धि के लिए आदर्श रहता है, जबकि फूल बनने के समय हल्का ठंडा मौसम लाभकारी होता है। इसकी खेती अच्छी जलनिकास वाली दोमट या बलुई दोमट मिट्टी में सर्वोत्तम होती है जिसका pH 6.0–7.5 होना चाहिए।

3. प्रमुख किस्में:

गुलदाउदी की किस्मों को फूल के आकार और उपयोग के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है जिसमें बड़े फूल वाली किस्मों स्नो बॉल में, चंद्रमा और अनमोल, मध्यम फूल

वाली में अजय और पूसा आदित्य और छिपकली के लिए येलो गोल्ड और जया प्रमुख हैं, जबकि गेमले के लिए लिटिल पिंक और फ़्लर्ट प्रमुख मणि हैं।

4. प्रवर्धन विधि:

गुलदाउदी का प्रवर्धन मुख्यतः कटिंग द्वारा किया जाता है जिसमें 5–7 सेमी लंबी स्वस्थ टर्मिनल कटिंग लेकर उसे IBA 500–1000 ppm घोल में उपचारित कर रेत, पीट और वर्मी कम्पोस्ट (1:1:1) मिश्रण में लगाया जाता है जिससे 2–3 सप्ताह में जड़ें विकसित हो जाती हैं।

5. खेत की तैयारी एवं रोपाई:

खेती के लिए भूमि को 2–3 बार जुताई कर भुरभुरी बनाई जाती है तथा अंतिम जुताई में 20–25 टन गोबर की खाद प्रति हेक्टेयर मिलाई जाती है, जबकि रोपाई का उपयुक्त समय उत्तर भारत में जुलाई–अगस्त होता है और बड़े फूल वाली किस्मों के लिए 45×45 सेमी तथा स्प्रे किस्मों के लिए 30×30 सेमी दूरी रखी जाती है।

6. पोषण प्रबंधन:

गुलदाउदी की अच्छी वृद्धि के लिए 100:150:100 किग्रा NPK प्रति हेक्टेयर की सिफारिश की जाती है जिसमें नत्रजन को दो भागों में देकर आधा रोपाई के समय और आधा 30 दिन बाद देना चाहिए तथा सूक्ष्म पोषक तत्व जैसे जिंक और आयरन का छिड़काव फूल की गुणवत्ता बढ़ाता है।

पोषण प्रबंधन

पोषक तत्व	मात्रा (किग्रा/हेक्टेयर)
नत्रजन	100
फास्फोरस	150
पोटाश	100

7. सिंचाई प्रबंधन:

रोपाई के तुरंत बाद हल्की सिंचाई करनी चाहिए और सामान्यतः 7–10 दिन के अंतराल पर सिंचाई देना उचित रहता है, जबकि पुष्प बनने के समय मिट्टी में नमी की कमी नहीं होने देना चाहिए।

- ❖ रोपाई के तुरंत बाद हल्की सिंचाई।
- ❖ सामान्यतः 7–10 दिन अंतराल।
- ❖ फूल बनने के समय नमी कमी नहीं होनी चाहिए।
- ❖ ड्रिप सिंचाई से जल बचत और रोग नियंत्रण बेहतर।

8. निराई-गुड़ाई एवं मल्चिंग:

खरपतवार नियंत्रण हेतु 2–3 निराई-गुड़ाई आवश्यक होती है तथा पुआल या सूखी पत्तियों से मल्चिंग करने पर नमी संरक्षण, तापमान संतुलन और खरपतवार नियंत्रण में सहायता मिलती है।

9. पिंचिंग एवं डिसबडिंग:

रोपाई के 3–4 सप्ताह बाद शीर्ष भाग को तोड़ने की क्रिया पिंचिंग कहलाती है जिससे अधिक शाखाएँ बनती हैं, जबकि बड़े फूल प्राप्त करने के लिए अतिरिक्त कलियों को हटाने की प्रक्रिया डिसबडिंग कहलाती है।

10. सहारा

लंबी किस्मों में पौधों को गिरने से बचाने तथा सीधा विकास सुनिश्चित करने के लिए बाँस, लकड़ी या जाल की सहायता से सहारा देना आवश्यक होता है।

11. कीट एवं रोग प्रबंधन:

गुलदाउदी में एफिड, थ्रिप्स और लीफ माइनर प्रमुख कीट होते हैं जिनके नियंत्रण के लिए नीम तेल 3–5 मि.ली. प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव किया जाता है, जबकि पाउडरी मिल्ड्यू के नियंत्रण हेतु सल्फर तथा लीफ स्पॉट के लिए कार्बेन्डाजिम 0.1% का छिड़काव प्रभावी रहता है।

12. फूल तुड़ाई एवं उपज:

कट-फ्लावर के लिए फूलों की तुड़ाई उस अवस्था में करनी चाहिए जब कली पूर्ण विकसित हो लेकिन पूरी तरह न खुली हो, जबकि ढीले फूलों के लिए पूर्ण खिले फूल तोड़े जाते हैं और औसतन 10–15 टन प्रति हेक्टेयर ढीले फूल तथा 2–3 लाख डंठल प्रति हेक्टेयर कट-फ्लावर प्राप्त होते हैं।

तुड़ाई अवस्था:

- ❖ कट-फ्लावर: कली पूर्ण विकसित लेकिन पूरी तरह न खुली हो।
- ❖ ढीले फूल: पूर्ण खिले फूल।

औसत उपज:

- ❖ ढीले फूल: 10–15 टन/हेक्टेयर
- ❖ कट-फ्लावर: 2–3 लाख डंठल/हेक्टेयर

13. कटाई पश्चात प्रबंधन:

तुड़ाई के बाद फूलों को तुरंत ठंडे स्थान पर रखना चाहिए तथा 2–4°C तापमान पर भंडारण करने से उनकी शेल्फ लाइफ बढ़ जाती है और ग्रेडिंग व पैकिंग के बाद शीघ्र विपणन करना लाभकारी होता है।

14. आर्थिक महत्त्व:

गुलदाउदी सजावटी बागवानी का प्रमुख फूल है जिसका उपयोग मालाओं, गुलदस्तों, मंच सजावट और धार्मिक आयोजनों में होता है तथा यह छोटे किसानों के लिए लाभदायक नकदी फसल होने के साथ विवाह और उत्सव सीजन में अधिक मांग वाली फसल भी है।

समस्याएँ एवं समाधान

समस्या	कारण	समाधान
कम फूल	अधिक नत्रजन	संतुलित उर्वरक
फूल छोटा	पोषक तत्व कमी	सूक्ष्म तत्व स्प्रे
पौधा लंबा	अधिक तापमान	सीसीसी स्प्रे
कलियाँ गिरना	जल कमी	नियमित सिंचाई

निष्कर्ष:

यदि किसान गुलदाउदी की वैज्ञानिक उत्पादन तकनीक जैसे उन्नत किस्मों का चयन, संतुलित पोषण, उचित सिंचाई, समय पर पिंचिंग और प्रभावी कीट-रोग नियंत्रण अपनाते हैं तो वे उच्च गुणवत्ता वाले फूलों की अधिक उपज प्राप्त कर सकते हैं और यह फसल पुष्प उद्योग में अत्यंत लाभदायक सिद्ध होती है।